GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

संवेगात्मक बुद्धि : भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ. दिप्ती एन. त्रिवेदी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
श्रीमती बी.सी.जे. कोलेज ओफ एज्युकेशन (एम.एड्.), खंभात ।
मो: 9898491347, E-mail Id: drdiptri@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत प्रपत्र में संवेगात्मक बुद्धि की भारतीय एवं पाश्चात्य आवधारणा के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है । भारतीय अवधारणा के लिए श्रीमद्भगवद्गीता एवं महाभारत का आधार लिया गया है । और उसके आदार पर संवेग को समझाया गया है । जबकि पाश्चात्य अवधारणा के लिए पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों की अवधारणाएँ लि गई है और उसके आधार पर विषय को समझाया गया है । इस प्रकार प्रस्तुत प्रपत्र में भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि की तुलना की गई है । भारतीय अवधारणा के अनुसार संवेगात्मक रूप से उच्चतम बुद्धि रखने वाला स्थितिप्रज्ञ पुरुष समस्त कामनाओं का त्यागी, आत्मसंतुष्ट, दुःख व सुख के प्रति समदृष्टि रखने वाला, राग, द्वेष, भय व क्रोध से मुक्त रहने वाला होता है जबकि पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार संवेगात्मक रूप से उच्च बुद्धि रखने वाले व्यक्ति में अपने संवेगों को पहचानने, समझने, मूल्यांकित करने व उसका विवेकपूर्ण नियंत्रण करने की क्षमता होती है। वह संवेगों की अनुभूति भी करता है एवं उचित ढंग से उनकी अभिव्यक्ति भी करता है। वह संवेगों से विरत न होकर उन्हें सहन करने की योग्यता रखता है। विवेकपूर्वक वह किसी संवेगात्मक स्थिति से जुड़ने या उससे अलग होने, स्वयं व दूसरों के संवेगों के निरीक्षण व नियंत्रण करने एवं नकारात्मक संवेगों को नियंत्रित कर सुखद संवेगों को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। वह संवेगों का तार्किक मूल्यांकन कर उनका प्रभावपूर्ण नियंत्रण करने की योग्यता रखता है।

चावीरूप शब्दः संवेगात्मक बुद्धि, भारतीय दृष्टिकोण, पाश्चात्य दृष्टिकोण ।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

प्रस्तावनाः

संवेगात्मक बुद्धि शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- संवेग और बुद्धि। संवेग अर्थात् उद्वेलित अवस्था एवं बुद्धि का अर्थ है विवेकपूर्ण चिन्तन की योग्यता।

संवेग व्यक्ति को किसी विशेष अनुक्रिया करने हेतु प्रेरित करते हैं। उदाहरण के लिए खुशी व्यक्ति को उस परिस्थिति की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है जिससे उसे सुख मिलता है। दुःख व्यक्ति को दुःख देने वाली परिस्थिति से अलग रहने के लिए प्रेरित करता है।

संवेग एवं उद्वेग की अवस्था है जिसके अन्तर्गत हर्ष, विषाद, भय, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या आदि की अनुभूति होती है। संवेगात्मक बुद्धि एक आन्तरिक योग्यता है जो संवेगों को महसूस करने, समझने व उनका प्रभावपूर्ण नियंत्रण करने की क्षमता प्रदान करती है। संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा व्यक्ति संवेगों का विवेकपूर्ण प्रबन्धन करता है जिससे वह अपने व्यवहार में वांछित परिवर्तन कर संवेगों को सकारात्मक दिशा में मोड़ने का प्रयास करता है। सर्वप्रथम हम संवेगात्मक बुद्धि की भारतीय अवधारणा की बात करेंगे।

संवेगात्मक बुद्धि की भारतीय अवधारणा

भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्थितप्रज्ञ व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से उच्चतम बुद्धि वाला माना जा सकता है। श्रीमद्भागवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को स्थितिप्रज्ञ व्यक्ति के लक्षण बताते हुए कहा है कि-

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मवन्येवात्मना तुष्टः स्थितिप्रज्ञस्तदोच्यते ।। 2/55

अर्थात् जिस काल में यह पुरुष मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को भली-भाँति त्याग देता है और आत्मा में ही सन्तुष्ट रहता है, उस काल में वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है।

दुःखष्वनुद्विग्रमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।। 2/56

दुःखों की प्राप्ति होने पर जिसके मन में उद्वेग नहीं होता, सुखें के लिए जो सर्वथा निःस्पृह रहता है तथा जिसके राग, भय और क्रोध नहीं रहते हैं, ऐसा मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्ततः प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। 2/57

जो पुरुष सर्वत्र स्नेहरहित हुआ शुभ या अशुभ वस्तु को प्राप्त होकर न प्रसन्न होता है और न द्वेष करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेश्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। 2/58

इन्द्रियों द्वारा विषयों को ग्रहण न करने वाले पुरुष के भी विषय तो निवृत्त हो जाते हैं परन्तु उनमें रहने वाला रस अर्थात् विषयों के प्रति आसक्ति निवृत्ति नहीं होती पर स्थितप्रज्ञ पुरुष की विषयासक्ति भी परमात्मा का साक्षात्कार कर निवृत्त हो जाती है। ऐसी व्यक्ति परम आनन्द को प्राप्त होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है-

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ।। 2/64

अपने अधीन किए हुए अन्तःकरण वाला व्यक्ति अपने वश में की हुई राग-द्वेष से रहित इन्द्रियों के द्वारा विषयों में विचरण करता हुआ अन्तःकरण की विमलता को, प्रसन्नता को प्राप्त होता है।

आपूर्यमाणमचल प्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा यं प्रविशिन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ।। 2/70

जैसे नाला नदियों के जल सब ओर से परिपूर्ण, अचल प्रतिष्ठा वाले समुद्र में उसको विचलित न करते हुए ही समा जाते हैं, वैसे ही सब भोग स्थितप्रज्ञ पुरुष में किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न किए बिना ही समा जाते हैं, वही पुरुष परम शान्ति को प्राप्त होता है। भोगों की कामना करने वाला नहीं। गीता के इन श्लोकों से स्थितप्रज्ञ पुरुष के निम्न लक्षण प्रकट होते हैं-

- मन में रहने वाली समस्त कामनाओं का त्याग करने वाला।
- अपने अन्तःकरण को अधीन कर लेने वाला।
- दुःखों से घबराता नहीं।
- सुखों की इच्छा नहीं रखता।
- आसक्ति, भय और क्रोध से मुक्त।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए महाभारत में कहा है-

शीतोष्णे चैव वायुश्च गुणा राजन् शरीरजाः ।
तेषां गुणानां साम्यं चेत, तदाहुः स्वस्थलक्षणम् ॥

महाभारत, आश्वमेधिक, 12/3

अर्थात् शीत उष्ण और वायु ये तीन शरीर के गुण हैं। यदि शरीर में इन तीनों गुणों की समानता हो तो यह शारीरिक रूप से स्वस्थ पुरुष का लक्षण है।

सत्वं रजस्तमश्चेति त्रय आत्मगुणाः स्मृताः।
तेषां गुणानां साम्यं चेत् तदाहुः स्वस्थलक्षणम् ।।

महाभारत आश्वमेधिक 12/4-5

अर्थात् सत्व, रज और तम ये तीन अन्तःकरण के गुण माने गए हैं। इन गुणों की समानता हो तो यह मानसिक स्वास्थ्य का लक्षण है। शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही अपने मन पर भी प्रकार नियंत्रण कर पाता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है कि-

यो न कामयते किंचिदभिमन्यते ।
इहलोकस्थ एवैष ब्रह्मभूयाय कल्पते ।।
प्रधानगुणतत्वज्ञः सर्वभूतविधान वित् ।
निर्ममों निरहङ्कारो मुच्यते नात्र संशयः ।।

महाभारत आश्वमेधिक अनु., 35/18-19

जो विद्वान संयोग और वियोग को तथा वैसे ही एकत्व और नानात्व को एक साथ तत्वतः जानता है वह दुःख से मुक्त हो जाता है। जो किसी वस्तु की कामना नहीं करता तथा जिसके मन में किसी बात का अभिमान नहीं होता, वह इस लोक में रहता हुआ भी ब्रह्मभाव की प्राप्ति के योग्य हो जाता है। जो माया और सत्यादि गुणों के तत्व को जानता है जिसे सब भूतों के विधान का ज्ञान है और जो ममता और अहंकार से रहित हो गया है वह मुक्त हो जाता है।

श्रीमद्भागवत में समदर्शी व्यक्ति के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है-

यस्य स्युर्वीत संकल्पाः प्राणेन्द्रिय मनोधियाम्
वृत्तयः स विनिर्मुक्तो देहस्थोऽपि हि तद्गुणैः॥
यसयात्मा हिंस्यते हिंस्त्रैर्येन किंचिद् यदृच्छया ।
अर्घ्यते वा कचितत्र न व्यतिक्रियते बुधः ।।
न स्तुवीत न निन्देत कुर्वतः साध्वसाधु वा ।
वदतो गुणदोषाभ्यां वर्जितः समदृङ्मुनिः ।।

श्रीमद्भागवत (11/11/14-16)

जिनके प्राण, इन्द्रिय, मन और बुद्धि की समस्त चेष्टाएँ बिना संकल्प के होती हैं, वे देह में स्थित रहकर भी उसके गुणों से मुक्त हैं। उन तत्वज्ञ मुक्त पुरुषों के शरीर को चाहे हिंसक लोग पीड़ा पहुँचाए और चाहे कभी कोई उसकी पूजा करने लगें, वे न तो किसी के सताने से दुःखी होते हैं और पूजा करने से सुखी। वे समदर्शी गुण और दोष की भेददृष्टि से ऊपर उठ गए हैं। वे न तो अच्छे काम करने वाले की स्तुति करते हैं और न बुरे काम करने वाले की निन्दा, न वे किसी की अच्छी बात सुनकर उसकी सराहना करते हैं और न बुरी बात सुनकर किसी को झिड़कते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा -

न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम ।

श्रीमद्भगवद्गीता (5/20)

जो पुरुष प्रिय को प्राप्त होकर हर्षित नहीं होता और अप्रिय को प्राप्त होकर उद्विग्न नहीं होता वह स्थिरबुद्धि है।

यदृच्छालाभ संतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धो च कृत्वापि न निबध्यते ॥

श्रीमद्भगवद्गीता (4/22)

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

जो बिना इच्छा के अपने आप प्राप्त हुई परिस्थिति में सदा संतुष्ट रहता है जिसमें मत्सरता का सर्वथा अतीत हो गया है- सिद्धि और असिद्धि में सम रहने वाला ऐसा पुरुष कर्म करते हुए भी वैधता नहीं। यही स्थितप्रज्ञ पुरुष का लक्षण है।

उपरोक्त उद्धरणों के आधार पर भारतीय दृष्टि से संवेगात्मक रूप से उच्चतम बुद्धि वाले स्थिर व्यक्ति के निम्न लक्षण प्रकट होते हैं-

- सब प्राणियों में द्वेषभाव से रहित।
- सबका ही स्वार्थरहित मित्र और हेतुरहित दयालु।
- ममता और अहंकार से रहित।
- दुःख-सुखों की प्राप्ति में सम।
- क्षमाशील, निरन्तर संतुष्ट।
- मन-इन्द्रियों सहित शरीर को वश में रखने वाला।
- जो किसी के द्वारा उद्वेग को प्राप्त नहीं होता।
- हर्ष, अमर्ष, भय आदि से रहित।
- आकांक्षा से रहित, दक्ष, उदासीन, पक्षपात से रहित।
- न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न आकांक्षा करता है।
- शुभ-अशुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी रहकर भी कर्मों में निरत रहने वाला।
- शत्रु-मित्र, मान-अपमान, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वो में सम
- आसक्ति से रहित, निन्दा स्तुति को समान समझने वाला, मौन रहने वाला।

इस प्रकार हर तरह से सन्तुष्ट रहने वाला, ममता और मोह से रहित पुरुष ही स्थिर बुद्धि है और वही संवेगात्मक रूप में बुद्धिमान है क्योंकि सुख-दुःख, भय, क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष आदि संवेग स्थितप्रज्ञ व्यक्ति को विचलित नहीं करते। वह हर स्थिति में समदर्शी बना रहता है। संवेगों से प्रभावित हुए बिना वह उचित आचरण करता है। संवेगों के प्रति अनुक्रिया करते हुए भी यह उनमें आसक्त न होकर विरत बना रहता है। यह हर्षित करने वाली व विषाद उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों में भी समदृष्टि रहते हुए सकारात्मक संवेगों से उल्लसित नहीं होता एवं नकारात्मक संवेग उसे व्यथित नहीं करते। वह समदर्शी बनकर हर परिस्थिति को

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

अनुकूल बनाने हेतु आचरण करके भी उससे विरत रहता है, अर्थात् संवेग जिसे उद्वेलित नहीं करते वही है संवेगात्मक रूप से उच्चतम बुद्धि रखने वाला स्थितप्रज्ञ पुरुष।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति के लक्षणों का अवलोकन करने के पश्चात् हम संवेगात्मक बुद्धि की पाश्चात्य अवधारणा एवं इसके आधार पर संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्तियों के लक्षणों की विवेचना करने की चेष्टा करेंगे। पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा निम्नलिखित हैं :-

संवेगात्मक बुद्धि की पाश्चात्य अवधारणा

पाश्चात्य अवधारणा के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि स्वयं की और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, निर्देशित करने व नियंत्रित करने की क्षमता है। जिसमें संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है वह दूसरों के संवेगों को पहचान कर उनका आवश्यकतानुसार नियंत्रण कर सकता है। जब व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानता है और वे किस कारण से उत्पन्न हुए हैं इसे समझने में सक्षम होता है तो वह मनोनुकूल उसके नियंत्रण का प्रयास कर सकता है। इस प्रकार वह अपने व्यवहार को सही आयाम देने में समर्थ होता है। इसके विपरीत होने पर व्यक्ति कुसमायोजन का शिकार हो सकता है। यदि व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानने, समझने और नियंत्रण करने में सक्षम नहीं है तो वह स्वयं को परिस्थितियों के आगे असहाय पाता है ऐसा व्यक्ति जल्द ही अपना धैर्य खो देता है और अनावश्यक मुसीबतों को आमंत्रण देने का कार्य कर बैठता है। ऐसा करना उसे सफलता के पथ से पीछे हटाता है। बार-बार की गई अनावश्यक गलतियाँ उसके मार्ग में बाधा उत्पन्न करती हैं और उन बाधाओं का सामना न कर पाने के कारण वह सफलता की ओर अग्रसर होता जाता है। यदि वह अपने संवेगों को भली प्रकार काबू में करना जानता है तो वह उन्हें इच्छित ढंग से प्रकट करता है। ऐसा व्यक्ति अपने सम्बन्धों में सतर्कता बरतता है। दूसरे व्यक्ति के संवेग को जानना, पहचानना और समझना उनके अनुकूल आचरण करने में व्यक्ति की सहायता करता है जिससे उसके सम्बन्धों में सजीवता व गर्माहट आती है।

मुरे और स्टॉफ (Murray & Staff) के अनुसार "संवेगात्मक बुद्धि नकारात्मक भावनाओं जैसे क्रोध, चिन्ता, अपराध-बोध, शत्रुता, उत्तेजना, आत्म-सन्देह आदि को प्रतिबंधित करने तथा उसके स्थान पर अनुरूपता, शान्तचित्तता आदि सकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर केन्द्रित होने की क्षमता है।" जिनमें यह क्षमता होती है वह अपनी नकारात्मक भावनाओं या संवेगों को काबू करना जानता है। उदाहरण के लिए एक उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला व्यक्ति क्रोध उत्पन्न होने पर अपना आपा नहीं खोता और अनावश्यक गलतियाँ भी नहीं

करता। Aristotle ने "Nicomachean Ethics" में कहा है "Anyone can become angry that is easy. But to angry with the right person, to the right degree, at the right time, for the right purpose and in the right way this is not easy." कोई भी क्रोधित हो सकता है ऐसा करना आसान है परन्तु उचित व्यक्ति से उचित सीमा तक, सही समय पर, सही उद्देश्य हेतु और सही तरीके से क्रोधित होना आसान नहीं है।" किन्तु उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति में ऐसी योग्यता होती है क्योंकि वह अपने संवेगों की अभिव्यक्ति उचित ढंग से कर सकता है। वह समस्या को हल करने हेतु और परिस्थिति को स्वयं के अनुकूल ढालने हेतु अपने संवेगों को आवश्यकतानुसार प्रकट कर सकता है या प्रकट होने से रोक सकता है। डेनियल गोलमैन (Daniel Goleman) के अनुसार "संवेगात्मक बुद्धि अपनी स्वयं की भावनाओं को और दूसरों की भावनाओं को पहचानने की क्षमता है जिससे व्यक्ति स्वयं को प्रेरित कर सके और स्वयं के संवेगों को अपने सम्बन्धों के दौरान नियंत्रित करने में सक्षम हो।" जो व्यक्ति अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने और कुशलतापूर्वक उनका नियंत्रण करना जानते हैं, जो दूसरे के संवेगों को उनके हाव-भाव, मुखाकृति, शारीरिक स्थिति व उनके द्वारा व्यक्त शब्दों के आधार पर समझने की क्षमता रखते हैं ये उनके साथ कुशलता से व्यवहार कर सकते हैं।

मेयर एवं सलोवे (Mayer & Salovey) के अनुसार "संवेगात्मक बुद्धि के अन्तर्गत संवेगों को उचित ढंग से प्रत्यक्षीकृत करने, मूल्यांकित करने तथा अभिव्यक्त करने की क्षमता, विचारों को उत्पन्न करने तथा उन तक पहुँचने की क्षमता, संवेगों को समझने की क्षमता एवं सांवेगिक और बौद्धिक विकास हेतु संवेगों को नियंत्रित व प्रेरित करने की क्षमता शामिल है।"

व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति में किस प्रकार का व्यवहार प्रदर्शित करेगा यह उसकी अपनी संवेगात्मक स्थिति की समझ तथा अन्य लोगों की संवेगात्मक स्थिति को अनुभूत करने की समझ पर निर्भर है इसका कुछ भाग आनुवंशिक व कुछ वातावरणीय कारकों से प्रभावित होता है।

सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति के चिन्तन को विवेकपूर्ण बनाने में सहायक होती है। संवेगों की अनुभूति करना और उसके आधार पर व्यवहार प्रदर्शित करने की क्रिया बालक के प्रारम्भिक विकास के दौरान ही शुरू हो जाती है। शुरुआती वर्षों में संवेगों की अभिव्यक्ति स्वच्छन्द रूप से होती है। बालक उन्हें नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करता परन्तु जैसे-जैसे वह आस-पास के लोगों की प्रतिक्रिया को समझने लगता है। वैसे-वैसे वह अपने संवेगों को नियंत्रित करने की ओर प्रवृत्त होता जाता है। बालक अपने आस-पास मौजूद लोगों के संवेगात्मक व्यवहार व अभिव्यक्ति का निरीक्षण कर अनेक व्यवहार स्वरूपों को सीखता जाता है।

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के अनुभवों से प्रभावित होती है व्यक्ति अनुभवों के आधार पर ही संवेगात्मक समझ विकसित करता है। संवेगात्मक बुद्धि कई कारकों जैसे तनाव, चिन्ता, आतुरता, उपलब्धि, समायोजन, सहनशीलता, धैर्य आदि को प्रभावित करती है। व्यक्ति में संवेगात्मक बुद्धि जितनी अधिक होती है तनाव के क्षणों में अपने संवेगों के बेहतर प्रबन्धन की क्षमता उसमें उतनी ही ज्यादा होती है।

पाश्चात्य अवधारणा के आधार पर संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति में निम्न गुण पाए जाते हैं-

- अपने व दूसरे व्यक्ति के संवेगों को पहचानने की क्षमता।
- उचित ढंग से संवेगों को अभिव्यक्त करने की क्षमता।
- यथार्थ और त्रुटिपूर्ण संवेगात्मक अभिव्यक्तियों में अन्तर करने की क्षमता।
- संवेगों को नामांकित करने एवं सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में संवेग जो अर्थ प्रेषित करते हैं उनकी व्याख्या करने की क्षमता।
- जटिल संवेगों को समझने की क्षमता।
- सुखद एवं दुःखद संवेगों के प्रति खुला रवैया अपनाने की क्षमता।
- अपने व दूसरे व्यक्ति के संवेगों पर विचारपूर्ण ढंग से नियंत्रण करने की क्षमता।
- नकारात्मक संवेगों को नियंत्रित करने एवं सुखद संवेगों को बढ़ावा देने की क्षमता।

संवेगात्मक बुद्धि की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा की तुलना

संवेगात्मक बुद्धि की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा की विवेचना करने पर निम्न अन्तर दृष्टिगत होते हैं-

- भारतीय दृष्टि के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने वाला व्यक्ति सम्पूर्ण कामनाओं को भली-भाँति त्याग कर आत्म-सन्तुष्ट रहता है जबकि पाश्चात्य दृष्टि से कामनाओं का त्याग करना या आत्म-सन्तुष्ट रहना उच्चतम संवेगात्मक बुद्धि को इंगित नहीं करता।
- भारतीय दृष्टि के अनुसार उच्चतम संवेगात्मक बुद्धि रखने वाला व्यक्ति दुःखों से उद्विग्न नहीं होता तथा सुखों के प्रति निस्पृह रहता है जबकि पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार ऐसा व्यक्ति सुखद और दुखद दोनों ही संवेगों के प्रति खुला रवैया अपनाता है अर्थात् उसकी उसी रूप में अनुभूति करता है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

- भारतीय दृष्टि के अनुसार उच्चतम संवेगात्मक बुद्धि रखने वाला स्थितिप्रज्ञ पुरुष राग, भय, क्रोध से विरत रहता है जबकि पाश्चात्य अवधारणा के अनुसार संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति नकारात्मक संवेगों को नियंत्रित करने की योग्यता रखता है। वह सुखद संवेगों को बढ़ावा देता है ऐसा करते हुए वे सुखद या दुखद संवेगों द्वारा अनुभूत सूचनाओं को न दबाता है न बढ़ाता है।
- भारतीय दृष्टि के अनुसार स्थितिप्रज्ञ पुरुष सर्वत्र स्नेहरहित होकर, शुभ या अशुभवस्तु को प्राप्त करके न प्रसन्न होता है और न द्वेष करता है जबकि पाश्चात्य दृष्टि बताती है कि वह दोनों के प्रति खुला रवैया अपनाने की योग्यता रखता है अर्थात् वह शुभ होने पर अपनी प्रसन्नता स्वीकार करता है और अशुभ होने पर यह समझता है कि अशुभ परिस्थिति के कारण उसके मन में दुःख उत्पन्न हुआ है अर्थात् वह अपने संवेगों का मूल्यांकन करने की क्षमता रखता है।
- भारतीय अवधारणा के अनुसार स्थितिप्रज्ञ पुरुष की विषयासक्ति निवृत्त हो जाती है जबकि पाश्चात्य अवधारणा के अनुसार विषयासक्ति निवृत्त नहीं होती वह स्वयं को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल ढालने हेतु ही संवेगों की उचित अभिव्यक्ति करता है जिससे कि मनोनुकूल इच्छित वस्तु की प्राप्ति की जा सके।
- भारतीय अवधारणा के अनुसार स्थितप्रज्ञ पुरुष की इन्द्रियाँ उसके वश में होती हैं वह इन्द्रियों द्वारा विषयों में विचरण करता हुआ भी उनसे विरत रहता है जबकि पाश्चात्य अवधारणा के अनुसार व्यक्ति संवेगों को मूल्यांकित करने के पश्चात् उचित तरीके से उनकी अभिव्यक्ति करता है जैसे वह जानता है कि किसी वस्तु के खोने पर दुःख होता है, वह दुःख से विरत नहीं होता बल्कि उसको स्वीकारते हुए उसे सकारात्मक संवेग की ओर मोड़ने का प्रयास करता है।
- भारतीय दृष्टि के अनुसार सब भोग स्थितिप्रज्ञ पुरुष में किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न किए बिना ही समा जाते हैं जबकि पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति यह मूल्यांकित कर सकता है कि किस कारण से उसके मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ है उस कारण का पता लगाने पर वह उसके नियंत्रण हेतु उचित उपाय करने का प्रयास करता है।
- भारतीय दृष्टि के अनुसार स्थितिप्रज्ञ पुरुष दुःखों से घबराता नहीं और सुखों की इच्छा नहीं रखता जबकि पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति दुःख जैसे नकारात्मक संवेग को नियंत्रित करने एवं सुख जैसे सकारात्मक संवेग को बढ़ावा देने का प्रयास करता है।

- भारतीय अवधारणा ममता तथा अहंकार रहित पुरुष को स्थितिप्रज्ञ मानती है जबकि पाश्चात्य दृष्टि में व्यक्ति ममता व अहंकार रहित न होकर वह उनको समझने का प्रयास करता है कि किसके प्रति उसके मन मे ममता प्रकट हो रही है। वह यह जानने में सक्षम होता है कि किस कारण से उसके मन में अहंकार उत्पन्न हो रहा है फिर वह उन संवेगों के मूल्यांकन व नियंत्रण का तार्किक प्रयास करता है।
- भारतीय अवधारणा के अनुसार जिसे प्रण, इन्द्रिय, मन और बुद्धि की समस्त चेष्टाएँ बिना संकल्प के होती हैं, वह देह में स्थित रहकर भी उसके गुणों से मुक्त है, वही संवेगों को पूर्ण रूप से नियंत्रित करने वाला स्थितिप्रज्ञ पुरुष है। पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार जिनकी समस्त चेष्टाएँ किसी संकल्प के कारण, संवेगों को इच्छित रूप में अभिव्यक्त करने हेतु तथा सकारात्मक संवेगों को बढ़ावा देने के लिए होती हैं वही सांवेगिक रूप से बुद्धिमान है।
- भारतीय दृष्टि के अनुसार स्थितिप्रज्ञ पुरुष किसी न किसी के सताने से दुःखी होता है न प्रशंसा करने से सुखी जबकि पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला यह समझता है कि सताए जाने के कारण वह दुःखी है या प्रशंसा किए जाने के कारण वह प्रसन्न है। वह सुखद तथा दुःखद संवेगों को सहने, उनका निरीक्षण व नियंत्रण करने की क्षमता रखता है।
- भारतीय दृष्टि के अनुसार स्थितप्रज्ञ पुरुष न तो अच्छे काम करने वाले की स्तुति करते हैं और न बुरे काम की निन्दा। वे न अच्छी बात को सुनकर उसकी सराहना करते हैं और न बुरी बात सुनकर किसी को झिड़कते हैं, जबकि पाश्चात्य दृष्टि में संवेगात्मक रूप से उच्च बुद्धि वाले व्यक्ति में उपरोक्त लक्षण होने चाहिए तभी वह सुखद संवेगों को बढ़ावा देने व दुःखद संवेगों को नियंत्रित करने में सफल होगा।

इस प्रकार भारतीय अवधारणा के अनुसार संवेगात्मक रूप से उच्चतम बुद्धि रखने वाला स्थितिप्रज्ञ पुरुष समस्त कामनाओं का त्यागी, आत्मसंतुष्ट, दुःख व सुख के प्रति समदृष्टि रखने वाला, राग, द्वेष, भय व क्रोध से मुक्त रहने वाला होता है जबकि पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार संवेगात्मक रूप से उच्च बुद्धि रखने वाले व्यक्ति में अपने संवेगों को पहचानने, समझने, मूल्यांकित करने व उसका विवेकपूर्ण नियंत्रण करने की क्षमता होती है। वह संवेगों की अनुभूति भी करता है एवं उचित ढंग से उनकी अभिव्यक्ति भी करता है। वह संवेगों से विरत न होकर उन्हें सहन करने की योग्यता रखता है। विवेकपूर्वक वह किसी संवेगात्मक स्थिति से जुड़ने या उससे अलग होने, स्वयं व दूसरों के संवेगों के निरीक्षण व नियंत्रण करने एवं नकारात्मक संवेगों को नियंत्रित

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 2
March-April:2025

कर सुखद संवेगों को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। वह संवेगों का तार्किक मूल्यांकन कर उनका प्रभावपूर्ण नियंत्रण करने की योग्यता रखता है।

संदर्भसूचि

1. तोमर, लज्जारामः भारतीय शिक्षा मनोविज्ञान के आधार, कुरुक्षेत्र: विद्याभारती प्रकाशन ।
2. पाण्डेय, कल्पलता एवं श्रीवास्तव, एम.एस. (2007), शिक्षा मनोविज्ञानः भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि, नई दिल्ली: टाटा मैकग्रॉ -हिल पब्लिशिंग कम्पनी ।
3. पाण्डेय राम, शकल, पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा दर्शन, आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर ।
4. महाभारत (गीता सहित)
5. श्रीमद्भगवद्गीता, गोरखपुर: गीताप्रेस ।
6. Goleman D (1999) Emotional Intelligence. New York: Bantam Books,.
7. Mayer, J.D., & Salovey, P. (1997). What is Emotional Intelligence? In P. Salovey & D.J. Sluyter (Eds.), Emotional Development and Emotional Intelligence: Educational Implications (p. 3-34). New York: Basic Books.
8. Ramaprasad, Dharitri (2013), "Emotions: An Indian Perspective", Indian Journal of Psychiatry 55. Suppl 2: 153-156.

Webliography

1. www.conferenceworld.in